किशन अब ख़ुश रहता है

ओम प्रकाश सिंह

विद्यालयों में हाशियाकृत समुदाय के विद्यार्थियों का अलग-अलग कारणों से अलगाव होना चिन्ता का विषय है। इन कारणों को बारीक़ी से पहचानकर अलगाव को संजीदगी से मिटाने की ज़िम्मेदारी विद्यालय की है। एक विद्यालय की सजग शिक्षिका कई मुश्किलों के बावजूद अपने सहयोगी के साथ, बहिष्कार का सामना कर रहे किशन को विद्यालय के खेल और सीखने-सिखाने के क्रियाकलापों में भागीदार बनाती हैं।

बच्चे शान्त क्यों हैं? कहीं विद्यालय बन्द तो नहीं! जब मैं एक प्राथमिक विद्यालय गया, मेरे मन में यही सवाल चल रहा था। विद्यालय का माहौल शान्त था। ऐसा लग रहा था कि विद्यालय में कोई बच्चा नहीं है। इस विद्यालय में दो शिक्षिकाएँ हैं। एक शिक्षिका बीमार हैं, इसलिए एक ही शिक्षिका पठन-पाठन का कार्य कर रही हैं। विद्यालय के दरवाज़े पर पहुँचकर देखा कि वह अन्दर से बन्द है। सोचा, शायद एक शिक्षिका होने की वजह से उन्होंने दरवाज़ा अन्दर से बन्द किया हुआ है ताकि बच्चे बाहर निकलकर शोर न करें। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। एक बच्चे ने खोला। कक्षा में शिक्षिका नहीं थीं, और उसमें 29 में से 22 बच्चे उपस्थित थे। सभी बच्चे अपने-अपने कार्यों में व्यस्त थे। मैंने पूछा, "आपकी शिक्षिका कहाँ हैं?" बच्चों ने जवाब दिया, "वह गाँव में गई हैं, और बच्चों को बुलाने के लिए।" मैंने पूछा, "आपने दरवाज़ा क्यों बन्द किया था?" बच्चों ने बताया कि स्कूल में शिक्षिका न होने से वे दरवाज़ा बन्द करके पढ़ रहे थे। यह अनुभव मेरे लिए नया था क्योंकि इस उम्र के बच्चे उत्साही होते हैं, शोर करते हैं, और आपस में झगड़ते रहते हैं, जबकि इस विद्यालय में यह इतने अनुशासित कैसे हैं? मैं अब बच्चों से ज़्यादा सवाल नहीं करना चाहता था, क्योंकि वे बहुत लगन से बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) कार्यपुस्तिका पर कार्य कर रहे थे। मैं यह भी नहीं कह सकता कि बच्चे डरे हुए थे। जब-जब बच्चों को कार्यपुस्तिका में कार्य करने में कठिनाई महसूस हो रही थी, वे मुझसे आकर सवाल कर रहे थे। शिक्षिका एक बच्चे को साथ में लेकर आईं। वे मुझे देखकर ख़ुश हुईं और बोलीं, "समुदाय से बच्चों को बुलाने गई थी। जब मैं विद्यालय आई तब सिर्फ़ दो ही बच्चे थे। मुझे सभी बच्चों के घर जाना पड़ा तब जाकर आज 22 बच्चे उपस्थित हुए हैं।" मैंने पूछा, "क्या आपको रोज़ाना बच्चों को उनके घर से बुलाना होता है?" उन्होंने कहा, "नहीं, आज बच्चे समय से आए थे। मैं ही देर से विद्यालय पहुँची हूँ जिसके कारण बच्चे लौट गए थे।"

> **लगातार विचार करने पर हमने तय किया कि कक्षा में प्रतिदिन बच्चों को कहानी सुनाई जाएगी, और उसपर चर्चा की जाएगी। अपनी इसी योजना के अनुसार शिक्षिका ने मज़ेदार कहानियों का चुनाव कर बच्चों को कहानियाँ सुनाईं और उनपर बातचीत की।**

चित्र 1: बच्चों के भावों का अवलोकन शिक्षक की ज़रूरत

मैं जब भी इस विद्यालय में आता हूँ तो देखता हूँ कि शिक्षिका का व्यवहार बच्चों के लिए बेहद मृदुल है, फिर भी किशन को देखकर लग रहा था कि वह सहमा हुआ है। वह शिक्षिका के साथ चर्चा में भाग नहीं ले रहा था। मैंने प्रयास भी किया कि वह कक्षा में चल रही बातचीत में शामिल हो, लेकिन वह परेशान व असहज दिखने लगा। आख़िर क्यों वह कक्षा की गतिविधि में प्रतिभाग नहीं कर रहा है; क्यों वह दूसरे बच्चों के साथ घुलने मिलने में असहज महसूस कर रहा है? यह सवाल मेरे मन में चल रहे थे। शिक्षिका ने बताया, "यह बच्चा तीसरी कक्षा में है, लेकिन कुछ भी पढ़-लिख नहीं पाता है। यह 'मन्दबुद्धि' है।" मन्दबुद्धि शब्द सुनकर मैं थोड़ा असहज हुआ। मैंने शिक्षिका से जानना चाहा कि उन्होंने कैसे पता लगाया यह बच्चा मन्दबुद्धि है। उनका जवाब था, "वह सभी बच्चों से अलग रहता है,

और कक्षा की गतिविधियों में प्रतिभाग नहीं करता है।" मैं इस विद्यालय में अकसर जाता रहा हूँ, और बच्चे मुझसे परिचित थे। मैंने किशन से बोला, "मण्डी-इ-च्च।" (कुडुख भाषा में खाना खाने को कहा जाता है। वैसे मुझे कुडुख भाषा नहीं आती है, मैंने इस भाषा के कुछ शब्द बच्चों से ही सीखे हैं।) वह बोला, "नहीं, अभी बाद में खाऊँगा।" उसका जवाब सुनकर महसूस हुआ कि वह एक सामान्य बच्चा है।

आख़िर किशन दूसरे बच्चों के साथ क्यों नहीं रहता?

विद्यालय के बाक़ी बच्चे मुझसे काफ़ी हिले मिले थे। मैंने दूसरे बच्चों से पूछा, "किशन तुम सबके साथ क्यों नहीं रहता है?" बच्चों के अलग-अलग जवाब सुनकर मैं बहुत व्यथित हो गया। एक ने कहा, "इसके घर में सूअर का मीट खाया जाता है इसलिए हम उससे बात नहीं करते।" दूसरे ने कहा, "इसके पिता चिड़िया मारकर खाते हैं।" तीसरे ने कहा, "किशन का परिवार असुर है (झारखण्ड में यह एक प्रकार की आदिम जनजाति है), हम इसकी भाषा को नहीं जानते हैं, तब हम इससे बात कैसे करेंगे!" एक बच्ची ने कहा, "मुझे तो इसे देखकर घृणा आती है, इसलिए मैं उसे कक्षा में अपने पास नहीं बैठने देती।" मैंने पूछा, "घृणा क्यों आती है?" उसने बेहद साधारण अन्दाज़ में कहा, "अरे, आपको नहीं पता! यह बहुत गन्दे रहते हैं। इन्हें कौन छुएगा?"

ऐसा अनुभव इस जनजातीय बहुल क्षेत्र में मेरे लिए एकदम नया था। अब मेरे मन में बस एक ही बात चल रही थी कि किशन को इस परिस्थिति से कैसे निकाला जाए। कैसे बच्चों को समझाया जाए कि वह भी तुम्हारी तरह ही है। शिक्षिका कुछ दूरी पर बैठकर बीच-बीच में हमारी बातें भी सुन रही थीं। उनके चेहरे को देखकर लग रहा था कि वह बच्चों से इस तरह की बातें सुनकर ख़ुश नहीं हैं। आख़िरकार मध्याह्न भोजन के दौरान, मैंने किशन के साथ हो रहे बाक़ी बच्चों के बर्ताव के बारे में शिक्षिका को बताया, और उन्हें विश्वास दिलाया कि अगर बाक़ी बच्चों की तरह किशन के लिए सकारात्मक माहौल बनाया जाएगा तो उसका सीखना भी बाकी दूसरे बच्चों की तरह एकदम सामान्य हो जाएगा।

विद्यालय के माहौल ने किशन को एक शान्त व चुप रहने वाला बच्चा बना दिया था। वह दूसरे बच्चों के साथ न बात करता था न ही मध्याह्न भोजन में उनके साथ खाना खाता था। मैंने शिक्षिका का ध्यान इस ओर दिलाया। अब शिक्षिका का सवाल था, "मैं किशन के साथ अलग से किस तरह से कार्य करूँगी? एक बच्चे के लिए मैं सभी बच्चों को नहीं छोड़ सकती।" मैं शिक्षिका की चुनौतियों को समझ रहा था।

किशन को खेलना बहुत पसन्द है

बच्चों को खेलना बहुत पसन्द होता है। खेलते समय वह भूल जाते हैं कि कौन-सा बच्चा किस धर्म, जाति या समुदाय से आ रहा है। कुछ ऐसा ही आज इस विद्यालय में भी हुआ। जब भाषा व गणित की कक्षाएँ समाप्त हो गईं, शिक्षिका और मैंने बच्चों को कक्षा के बाहर लाकर चूहे-बिल्ली का खेल शुरू किया। खेल में किशन की भी सक्रिय भागीदारी रही। वह जब भी चूहा बना, उसे कोई बच्चा नहीं पकड़ सका। वह बहुत तेज़ भागता था। कक्षा 3 का बच्चा कक्षा 5 के बच्चों की पकड़ में नहीं आ रहा था। अब विद्यालय में सभी को पता चला कि किशन बहुत तेज़ दौड़ता है। शिक्षिका भी इस बात को समझ चुकी थीं कि वह एक सामान्य बच्चा है। अब हमें कक्षा के बच्चों को यह एहसास दिलाना था कि किशन उनका दोस्त है, और शिक्षिका का ध्यान भी अब किशन की तरफ़ था। वह कक्षा में उसके कार्यों का बारीक़ी से अवलोकन कर रही थीं। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अभी तक जिस बच्चे को वह मन्दबुद्धि समझ रही थीं, वह सामान्य बच्चा है। कक्षा में उसका बाक़ी बच्चों की तरह सीखना नहीं होने का कारण वहाँ उसके प्रति बना नकारात्मक माहौल था। खेलों में किशन की सक्रियता का अवलोकन करने के बाद, शिक्षिका को समझ में आया कि उसका कक्षा में लगातार जुड़ाव न होने का कारण क्या है। उन्होंने देखा कि किशन रोज़ाना समय पर विद्यालय आता है, पर वह कक्षा के बच्चों से घुल मिल नहीं पा रहा है। इसी कारण वह पूरे दिन कक्षा में उदास व अलग-थलग रहता है।

अब शिक्षिका के सामने यह चुनौती थी कि सभी बच्चों के सीखने के स्तर को ध्यान में रखकर किशन के साथ कैसे कार्य किया जाए। कक्षा में क्या किया जाए कि बच्चे उससे घुल मिल सकें। लगातार विचार करने पर हमने तय किया कि कक्षा में प्रतिदिन बच्चों को कहानी सुनाई जाएगी, और उसपर चर्चा की जाएगी। अपनी इसी योजना के अनुसार शिक्षिका ने मज़ेदार कहानियों का चुनाव कर बच्चों को कहानियाँ सुनाईं और उनपर बातचीत की। इन कहानियों में 'अड़ियल गाय', 'चतुर ख़रगोश', 'दोस्त की मदद', आदि शामिल हैं।

'अड़ियल गाय' कहानी सुनने में बच्चों को ख़ूब मज़ा आ रहा था क्योंकि एक-दो पात्रों को छोड़कर इस कहानी में आए सभी पात्र बच्चों के सन्दर्भ से जुड़े थे। बच्चों ने अपने आसपास भी ऐसी गाय को देखा है जो दूध देते समय अपने मालिक को परेशान करती है। बच्चे अपने अनुभव से गाय को सड़क से हटाने की तरक़ीबें सुझा रहे थे। ज़्यादातर बच्चों का कहना था कि पूँछ पकड़कर खींचने से गाय तुरन्त खड़ी हो जाएगी। एक बच्चे ने बताया कि गाय की रस्सी को सबको मिलकर खींचना चाहिए। बहुत देर तक इस कहानी पर बातचीत करने के बाद भी बच्चों से यह जवाब सुनने को नहीं मिला कि गाय को प्यार से घास देने पर वह खड़ी होकर सड़क से हट सकती है।

'चतुर ख़रगोश' की कहानी बच्चों के लिए नई नहीं थी। फिर भी बच्चे इस कहानी का मज़ा ऐसे ले रहे थे मानो पहली बार सुन रहे हों। हालाँकि सुनी हुई कहानी को बीच में रोक कर आगे क्या हुआ होगा, जैसा अनुमान लगाने वाली गतिविधि में बच्चों ने ज़्यादा रुचि नहीं ली। कहानी के बाद बच्चों से बातचीत करने के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

बच्चों से पहला सवाल किया गया, "ख़रगोश ने शेर को कुएँ में कूदने को क्यों कहा होगा?" बच्चों ने जवाब दिया, "शेर जंगल के जानवरों को मारकर खा जाता था। सभी जानवरों की रक्षा के लिए ख़रगोश ने ऐसा कार्य किया।"

दूसरा सवाल था, "जंगल में जब सभी जानवरों ने शेर से समझौता किया था तो फिर क्या ख़रगोश ने जो किया वह सही था?" सभी बच्चों ने कहा, "ख़रगोश ने जो किया वह ठीक था।"

तीसरा सवाल पूछा, "हो सकता है शेर के बच्चे भी हों, और शेर के मर जाने के बाद वे भी भूखे मर गए होंगे! क्या ख़रगोश को समझौता तोड़ना चाहिए था?" इस सवाल पर ज़्यादातर बच्चे चुप थे।

हमने अनुभव किया कि बच्चे कहानी के उस पात्र की तरफ़ ख़ुद को रखकर देखते हैं जो कहानी में कमज़ोर दिखाया गया है। अगर हम 'अड़ियल गाय' कहानी की बात करें तो बच्चों की सहानुभूति गाय के मालिक की तरफ़ थी, जबकि बच्चों को पता था कि मालिक ने गाय को कम चारा दिया है। फिर भी वह बोल रहे थे कि डण्डे से मारने पर गाय खड़ी होकर चल देगी। दूसरी कहानी में भी बच्चों से बातचीत करते हुए जब सवाल पूछा गया कि ख़रगोश ने समझौता तोड़कर अच्छा किया या बुरा, तब ज़्यादातर बच्चों ने जवाब दिया कि अच्छा किया। इन सबपर विचार करते हुए हम इस बात से सन्तुष्ट थे कि किशन भी कहानी की चर्चा में प्रतिभाग कर रहा था। उसने भी अपनी बात रखने का प्रयास किया। हमने अनुभव किया कि अगर कहानी के बाद बच्चों को चर्चा करने का अवसर दिया जाए तो उनकी समझ बेहतर बनती है।

बच्चों के साथ कहानी पर कार्य करते हुए हम समझ चुके थे कि बच्चों की सहानुभूति कहानी में आए कमज़ोर पात्रों के साथ है, लेकिन दैनिक जीवन में वह इसे लागू नहीं कर रहे हैं। समझ बनी कि कहानी सुनाने के साथ कक्षा की दूसरी प्रक्रियाओं में भी बदलाव करने की ज़रूरत होगी।

मध्याह्न भोजन में शिक्षिका का शामिल होना

बच्चों के साथ कार्य करते हुए हमने अनुभव किया कि कहानी सुनाने के साथ हमें कुछ प्रयोग करके भी दिखाने होंगे, ताकि बच्चों को यह एहसास कराया जा सके कि किशन भी उन्हीं की तरह है, और उसे भी दोस्त बनाया जा सकता है। इसके लिए शिक्षिका ने बच्चों के साथ दोपहर का खाना खाने की योजना बनाई। विद्यालय में यह पहली बार हो रहा था कि शिक्षिका बच्चों के साथ बैठकर खाना खा रही थीं। उन्होंने किशन को अपने पास बैठाया। सभी बच्चों को शिक्षिका के साथ बैठकर खाने में अच्छा लग रहा था। इस प्रकार से शिक्षिका लगातार बच्चों के साथ बैठकर दोपहर का भोजन करती रहीं। वह किशन को अपने साथ ही बैठाती थीं। अब किशन शिक्षिका से घुल मिल चुका था, और धीरे-धीरे दूसरे बच्चे भी उससे जुड़ने लगे।

विद्यालय में सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन शिक्षिका के लिए चुनौती अभी कम नहीं हुई थी। समुदाय यह स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि किशन शिक्षिका के साथ बैठकर खाना खाता है। कुछ बच्चों के अभिभावकों ने शिक्षिका से इस मसले पर बात भी की। इस चुनौती से निपटने के लिए शिक्षिका ने अभिभावक-शिक्षक बैठक में बच्चों के सीखने की प्रगति को साझा करने के साथ-साथ कक्षा के बाहर की जा रही अन्य गतिविधियों में अभिभावकों को भी शामिल करना शुरू किया। किशन की प्रगति और उसके उत्साह को देखकर अभिभावक भी महसूस कर रहे थे कि किशन के साथ-साथ बाक़ी बच्चे भी बेहतर सीख सकते हैं।

> **हमने अनुभव किया कि बच्चे कहानी के उस पात्र की तरफ़ ख़ुद को रखकर देखते हैं जो कहानी में कमज़ोर दिखाया गया है।**

प्रतिदिन सभी बच्चों को खेल गतिविधि में शामिल करना

शिक्षिका ने अपने विद्यालय में एक घण्टा खेल के लिए रखा। वह विद्यालय में बच्चों से भाला फेंक, निशानेबाज़ी, कंचे खेलना, आदि खेल करवाने लगीं। किशन इन खेलों में पारंगत था। भाला फेंक में भी वह अपनी कक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर रहा था। विद्यालय में स्थानीय खेलों के लगातार आयोजन व किशन के बेहतर प्रदर्शन से विद्यालय के दूसरे बच्चे उससे घुलने मिलने लगे थे।

इसके साथ ही, शिक्षिका ने कक्षा में कुड़ुख भाषा बोलने और कहानियाँ सुनाने का कार्य जारी रखा। अब विद्यालय में किशन को देखकर अच्छा लगता है। वह सभी बच्चों से घुल मिल रहा है, उनके साथ खेल रहा है, और दूसरे बच्चे भी उससे बातचीत कर रहे हैं।

ओम प्रकाश सिंह ने विभिन्न संस्थानों में लगभग 3 साल तक शिक्षकों व समुदाय के साथ सामाजिक-शैक्षिक मुद्दों पर कार्य किया है। दिसम्बर 2022 से झारखण्ड में गुमला ज़िले के चैनपुर प्रखण्ड में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय में बच्चों की सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में नवाचार करने और उनके अनुभव दर्ज करने में विशेष रुचि है।

सम्पर्क : omprakash.singh@azimpremjifoundation.org